अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : ग्यारहवीं– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2025)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) निगोद के जीव होते हैं-
(क) व्यवहार राशि में (ख) अव्यवहार राशि में
(ग) दोनों में (घ) दोनों में नहीं (ग)

(ii) संसार में इससे बढ़कर दूसरा कोई दुःख नहीं है-
(क) जन्म (ख) मरण
(ग) बुढ़ापा (घ) जन्म-मरण (घ)

(iii) भगवान अभिनन्दन स्वामी की जन्म नगरी है-
(क) अयोध्या (ख) बनारस
(ग) कोशाम्बी (घ) चन्द्रपुरी (क)

(iv) चन्द्रप्रभ स्वामी के प्रथम गणधर थे-
(क) विदर्भ (ख) दिन्न
(ग) चमर (घ) सुव्रत (ख)

(v) शान्तिनाथ स्वामी किस विमान से आये थे-
(क) सौधर्म (ख) आनत
(ग) प्राणत (घ) सर्वार्थसिद्ध (घ)

(vi) पर्यायार्थिक नय के भेद हैं-
(क) 4 (ख) 3
(ग) 7 (घ) 2 (क)

(vii) हृदय में कितनी पंखुड़ी के कमल का ध्यान पदस्थ ध्यान है-
(क) 16 (ख) 24
(ग) 8 (घ) 4 (ख)

(viii) एक घन कितने राजु का होता है-
(क) 5 (ख) 6
(ग) 7 (घ) 4 (ग)

(ix) यह तपस्वी बड़े रूपवान है, यहा किसमें किसका उपचार है-
(क) गुण में पर्याय का (ख) पर्याय में द्रव्य का
(ग) पर्याय में पर्याय का (घ) द्रव्य में द्रव्य का (क)

(x) सम्यक् चारित्र का निमित्त पाकर मोक्ष की प्राप्ति का उपादान क्या है-
(क) गुरु (ख) धर्म
(ग) भव्य जीव (घ) परमात्मा (ग)

(xi) निश्चय को पानी तो व्यवहार को क्या कहा है-
(क) सरोवर (ख) समुद्र
(ग) कुआ (घ) पाल (घ)

(xii) जीव द्रव्य का गुण है-
(क) उपयोग (ख) योग
(ग) लेश्या (घ) चारित्र (क)

(xiii) पर्याय के कितने भेद होते हैं-
(क) 3 (ख) 2
(ग) 4 (घ) 5 (ख)

(xiv) नय और निक्षेप किसकी आधारशिला है-
(क) प्रमाण (ख) उपादान
(ग) अनेकांत (घ) उत्सर्ग मार्ग (ग)

(xv) कौनसा व्यवहार भाव निक्षेप है-
(क) वर्तमान पर्याय (ख) भूत पर्याय
(ग) भविष्य पर्याय (घ) कालातीत पर्याय (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(i) मल्लीनाथ जी की माता का नाम प्रभावती था। (हाँ)
(ii) अरिष्टनेमी जी की आयु दस हजार वर्ष थी। (नहीं)
(iii) पार्श्वनाथ भगवान का शासन 250 वर्ष तक चला। (हाँ)
(iv) मुनिसुव्रत स्वामी के 28 गणधर थे। (नहीं)
(v) अनन्तनाथ भगवान का शासन काल 9 सागर था। (नहीं)
(vi) मिश्र दृष्टि में जीव अभवी हो सकते हैं। (नहीं)
(vii) समवसरण में लेश्या के 8 भेद लिए हैं। (नहीं)
(viii) समवसरण में समुच्चय बोल 47 हैं। (हाँ)
(ix) अनेक प्रकार के परिणाम वाले जीव जिसमें होते हैं, उसे समवसरण कहते हैं। (हाँ)
(x) 'दातुन लाओ' यह संग्रह नय का उदाहरण है। (हाँ)
(xi) कार्य शुद्ध और कारण शुद्ध में जमाली का उदाहरण है। (नहीं)
(xii) कार्य की सिद्धि में मूल कारण उपादान होता है। (हाँ)
(xiii) 'पद्मनाभ तीर्थंकर महावीर जैसे होंगे' यह यथार्थ वस्तु यथार्थ उपमा का उदाहरण है। (हाँ)
(xiv) गुणी सोना और उसका गुण कंगन है। (नहीं)
(xv) 'ज्ञान से मोक्ष होता है' इसमें ज्ञान की मुख्यता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(i)	वासुपूज्य स्वामी	(क) 27 बोल	30 सागर
(ii)	धर्मनाथजी	(ख) स्याद् अस्ति	विजय विमान
(iii)	सम्यग्दृष्टि	(ग) अवक्तव्य	क्रियावादी समवसरण
(iv)	वनस्पतिकाय	(घ) आचारांग	27 बोल
(v)	सप्तभंगी	(च) 30 सागर	स्याद् अस्ति
(vi)	वक्तव्य	(छ) क्रियावादी समवसरण	अवक्तव्य
(vii)	परमात्मा	(ज) विजय विमान	सिद्ध
(viii)	उत्सर्ग मार्ग	(झ) परम्परागम	आचारांग
(ix)	आत्मागम	(य) देश-प्रत्यक्ष	परम्परागम
(x)	अवधिज्ञान	(र) सिद्ध	देश-प्रत्यक्ष

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(i) मुझे 30 वें शतक के पहले उद्देशक से लिया गया है। समवसरण का थोकड़ा
(ii) मेरे 63 भेद होते हैं। अज्ञानवादी
(iii) मुझमें 26 बोल पाये जाते हैं। तेउ वायु
(iv) मैं वस्तु के किसी एक धर्म को लेकर चिन्तन करता हूँ। नय
(v) मैं अतीत और अनागत पर्याय को लेकर विचार करता हूँ। द्रव्य निक्षेप
(vi) मेरा गुण वर्तन करना है। काल द्रव्य
(vii) हम आधेय है, जीव हमारा आधार है। ज्ञान-दर्शन
(viii) मैं श्रेष्ठ मार्ग हूँ। उत्सर्ग
(ix) मैं लोक रूप पिण्ड का चिन्तन करता हूँ। पिण्डस्थ ध्यान
(x) मेरे अन्दर जीव-अजीव आदि का स्वरूप बतलाया गया है। द्रव्यानुयोग
(xi) निरयावलिया पंचक मेरे भेद हैं। धर्मकथानुयोग
(xii) हमारे अन्दर सुदक्खु जागरणा होती है। पाँचवाँ गुणस्थान
(xiii) हम व्यवहार-अव्यवहार दोनों राशियों में रहते हैं। निगोद
(xiv) मुझमें अनन्त-अनन्त पर्याय हैं। परमाणु
(xv) मैं मोक्ष की साधना का मुख्य द्वार हूँ। मानव भव

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) केवली समुद्घात की प्रथम समय की प्रक्रिया लिखिए।
पहले समय में केवली भगवान लम्बाई में ऊपर और नीचे लोकपर्यन्त, चौड़ाई में अपने शरीर प्रमाण दण्ड करते हैं।

(ii) समुद्घात शब्द का अर्थ लिखिए।
समुद्घात का अर्थ- सम्+उद्+घात- इन तीनों से मिलकर समुद्घात शब्द बना है, जिसका अर्थ है- एकीभाव पूर्वक प्रबलता से कर्मों का घात करना।

(iii) जम्बूद्वीप की परिधि कितनी है ?
इसकी परिधि 313227 योजन, तीन कोश, एक सौ अठाईस धनुष और साढ़े तेरह अंगुल से कुछ अधिक (झाझेरी) है।

(iv) ईरियावहिया का आठवा भंग किसकी अपेक्षा से है?
नहीं बांधा था, नहीं बांधता है, नहीं बांधेगा- अभवी जीव में पाया जाता है क्योंकि उसने पूर्व भव में नही बांधा था। वर्तमान भव में नहीं बांधता है और आगामी भव में नहीं बांधेगा।

(v) ईरियापथिक बंध कौन-कौन से गुणस्थानों में होता हैं ?
11, 12, 13वें गुणस्थान में

(vi) ईर्यावहिया का दूसरा भंग किसको होता है ?
बांधा था, बांधता है, नहीं बांधेगा- उस जीव में पाया जाता है जिसने पूर्व भव में उपशम श्रेणी की थी उसमें बांधा था, वर्तमान में क्षपक श्रेणी में बांधता है और फिर मोक्ष चला जायगा, इसलिए आगामी काल में नहीं बांधेगा।

(vii) तृतीय उद्देशक परम्पर उववन्ना में किन जीवों को कथन हुआ है ?
तृतीय उद्देशक परम्परा उववन्ना- उन जीवों का कथन जिनको उत्पन्न हुए बहुत समय हो गये अर्थात् प्रथम समय के उत्पन्न हुए जीवों के अलावा सभी जीवों का समावेश इस उद्देशक में हो जाता है।

(viii) विनयवादी किसे कहते हैं ?
स्वर्ग, अपवर्ग (मोक्ष) आदि की प्राप्ति विनय से ही होती है, इसलिए विनय ही श्रेष्ठ है, ऐसा एकान्त मानने वाले विनयवादी कहलाते हैं। ये भी मिथ्यादृष्टि होते हैं।

(ix) दूसरे, चौथे, छठे उद्देशक के अनुसार भवनपति वाणव्यन्तर में औघिक की अपेक्षा कौनसे बोल नहीं पाये जाते हैं ?
मनयोग, वचनयोग और मिश्रदृष्टि

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) 24 तीर्थंकरों के सम्यक्त्व प्राप्ति के बाद के कितने-कितने भव हुए?
ऋषभदेव स्वामी की भव संख्या 13, शांतिनाथ स्वामी की भव संख्या 12, अरिष्टनेमि स्वामी की भव संख्या 9, पार्श्वनाथ स्वामी की भव संख्या 10, महावीर स्वामी की भव संख्या 27 और शेष तीर्थंकरों की भव संख्या 3 है।

(ii) शैलेशी अवस्था में जीव क्या-क्या कार्य करता है ?
शैलेशी अवस्था में असंख्यात गुण श्रेणियों से प्राप्त तीन कर्मों के असंख्यात कर्म स्कन्धों की प्रदेश और विपाक से निर्जरा कर चरम समय में चारों कर्मांशों को एक साथ क्षय करते हैं और औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर का सर्वथा त्याग करते हैं। इन चार कर्मों को युगपत (एक साथ) क्षय

करते ही औदारिक, तैजस और कार्मण इन तीन शरीरों का पूर्णतया सदा के लिये त्याग कर देते हैं।

(iii) केवली समुद्घात के बाद क्या-क्या क्रिया करके जीव मोक्ष जाता है ?
केवली समुद्घात से निवृत्त होकर मनयोग, वचन योग काय योग प्रवर्ताते हैं। योगों का निरोध करके अयोगी होते होते हैं। अयोगी अवस्था को प्राप्त होकर पाँच ह्रस्व अक्षर उच्चारण करने में जितने समय लगते हैं उतने असंख्यात समय प्रमाण अन्तर्मुहूर्त काल की शैलेशी अवस्था को प्राप्त करते हैं एवं वेदनीय आदि चार अघाती कर्मों को भोगने हेतु पूर्व रचित गुण श्रेणी को अंगीकार करते हैं। एक समय की अविग्रहगति से ऊपर सिद्धि गति में जाकर साकार उपयोग केवलज्ञान उपयोग से उपयुक्त सिद्ध बुद्ध मुक्त होते हैं।

(iv) आवर्जीकरण क्या है ? यह कब किया जाता है ?
आवर्जीकरण का अर्थ अभिमुख करना है अर्थात् आत्मा को मोक्ष की ओर अभिमुख करना आवर्जीकरण है। आवर्जीकरण का दूसरा नाम आवश्यक करण भी है। जो केवली भगवान् केवली समुद्घात करते हैं वे पहले आवर्जीकरण करते हैं और उसके बाद केवली समुद्घात करते हैं।

(v) इरियावहिया बंध का चौथा भंग किसमें पाया जाता है?
बांधा था, नहीं बांधता है, नहीं बांधेगा- उस जीव में पाया जाता है जो वर्तमान में चौदहवें गुणस्थान में है, उसने पूर्व में बांधा था, वर्तमान में नहीं बांधता है और आगामी काल में नहीं बांधेगा।

(vi) ईर्यापथिक बंध किसके नहीं होता है और किसके होता है ?
नारकी, तिर्यंच, तिर्यंचणी, देव, देवांगना नहीं बांधते हैं। मनुष्य और मनुष्यणी बांधते हैं। वे भी अवेदी बांधते हैं।

(vii) ईर्यापथिक बंध सादि-सपर्यवसित क्यों कहा गया है ?
क्योंकि इसका बंध ग्यारहवें गुणस्थान से लेकर तेरहवें गुणस्थान तक के सयोगी वीतरागियों में ही होता है। अयोगी अवस्था में तथा सिद्धों में बंध नहीं होता, अतः अपर्यवसित (अनन्त) नहीं होता।

(viii) समवसरण के चार भेदों के नाम लिखते हुए अज्ञानवादी के भेद समझाइए।
चार भेद- 1. क्रियावादी, 2. अक्रियावादी, 3. अज्ञानवादी और 4. विनयवादी।
अज्ञानवादी- इनके 67 भेद होते हैं। जीवादि नौ तत्त्वों को 1 सत्, 2 असत्, 3 सत् असत्, 4 अवक्तव्य, 5. सत् अवक्तव्य, 6 असत् अवक्तव्य और 7 सत् असत् अवक्तव्य। इन सात भेदों से गुणा करने पर 63 भेद होते हैं।

(ix) मिश्रदृष्टि को अज्ञानवादी व विनयवादी क्यों कहा गया है ?
मिश्रदृष्टि- साधारण परिणाम वाले होने से, अनिर्णय की स्थिति वाले होने से, उनकी गणना आस्तिक या नास्तिक में नहीं की जाती है, इसलिए वे अज्ञानवादी और विनयवादी होते हैं।